भाषाओं की कुंजी
कल्पना की उड़ान

प्रथम बुक्स

वार्षिक रिपोर्ट 2023-2024

TWENTY YEARS OF PRATHAM BOOKS

प्रबंधन रिपोर्ट

यह वर्ष प्रथम बुक्स के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक वर्ष है, जो बच्चों के बीच कहानियों के द्वीप को प्रज्ज्वलित करते हुए लगभग दो दशकों की सार्थक उपस्थिति को चिह्नित करता है। 'हर बच्चे के हाथ में एक किताब' रखने की अमिट संकल्पना के साथ इस साहसिक मिशन की शुरुआत हुई थी, जो आज अपने वृहद् रूप में एक प्रकाशन संस्थान के रूप में विकसित हो चुका है। तेजी से बदलते परिवेश एवं परिस्थितियों के साथ कदमताल मिलाते हुए आधुनिक तकनिकी के सहयोग से प्रथम बुक्स कहानी कहने की पारम्परिक सीमाओं का अतिक्रमण करते हुए इस विधा को एक नया स्वरूप प्रदान रहा है।

दो दशक की इस खुबसूरत यात्रा को पार करने के बाद हम खुद से यह सवाल पूछते हैं कि वह कौन सी ऐसी बातें हैं जो एक कहानी को प्रिय बनाती है? कहानी को कैसे सुनाया जाना चाहिए? बच्चों को सबसे अधिक आनंद किससे मिलता है? उपर्युक्त सभी प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ते हुए हमने इस दिशा में कई प्रयोग किये। जैसे-कहानी की किताबें, कहानी कार्ड, मौखिक रूप से सुनाई जाने वाली कहानियाँ, मोबाइल पर ऑन-डिमांड कहानियाँ, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से संक्षिप्त कहानियाँ, इसके अलावा हमने ऐसी कहानियों की भी रचना की जो पढ़ने में रोचक हों, सुनने में मधुर एवं देखने में आकर्षक एवं सरल हों। उपर्युक्त सभी विशेषताओं के बीच एक और महत्त्वपूर्ण पहलू जिस पर हमने लगातार ध्यान केंद्रित किया है, वह यह है कि कोई कहानी न केवल बेहतरीन तरीके से सुनाई जाने पर प्रिय बनती है, बल्कि तब वह और भी अधिक प्रभावशाली हो जाती है, जब उसे उसी भाषा में सुनाया जाए जो पाठकों एवं श्रोताओं के सबसे करीब एवं प्रासंगिक हो।

हम अक्सर उस भाषा में सोचते, सपने देखते एवं उसका विश्लेषण करते हैं जो हमारे लिए सरल एवं स्वाभाविक होती है। यह अक्सर अंग्रेजी के अलावा कोई अन्य भाषा होती है। यही कारण है कि हमें ऐसी कहानियों की आवश्यकता होती है जो हमारे सपनों और विचारों से मेल खाती हों और जो हमारी अपनी भाषा में प्रस्तुत की जाएँ। प्रत्येक भाषा अपने परिवेश से संदर्भित मुहावरे, सूक्ष्म सांस्कृतिक विशेषताएँ और आसानी से पहचाने जाने वाले प्रतिबिम्ब लेकर चलती है। जिसमें रूपक स्थानीय होते हैं, प्रतीक आत्मीय होते हैं और कहानियों से एक गहरा संबंध स्थापित होता है। इसलिए उत्कृष्ट सामग्री और प्रस्तुति की सुंदरता से परे हम उन भाषाओं के उपयोग पर भी ध्यान केंद्रित करते हैं जो बच्चों के लिए प्रासंगिक एवं परिचित हो।

हालाँकि अनुवाद बच्चों के लिए सुलभ कहानियों की संख्या में विस्तार भी करते हैं लेकिन इनकी एक छोटी सी सीमा होती है, और वह है संदर्भ को सही ढंग से स्थापित करना और सूक्ष्म भावनाओं को सटीक रूप से पकड़ने की चुनौती। हम इसे अपना कर्तव्य मानते हैं कि हम न केवल विभिन्न भाषाओं में मौलिक सामग्री उपलब्ध कराएँ बल्कि उन भाषाओं में कहानियों की खोज करें जो हमारे सपनों और विचारों की भाषा में रची-बसी हो।

हमारा मूल रूप से स्थानीय भाषाओं में लिखी किताबों की शृंखला पर ध्यान केंद्रित करने का मुख्य उद्देश्य कहानियों की इस विशाल दुनिया से बच्चों के अनुभव को समृद्ध करना है।

इस वर्ष हमने मूल रूप से 11 भाषाओं में 20 पुस्तकें और 10 वॉल बुक्स प्रकाशित किए हैं। अनुवाद कार्य के अंतर्गत, हमने अंग्रेजी भाषा के मध्यस्थता के बिना एक भारतीय भाषा से दूसरी भारतीय भाषा में 8 पुस्तकों का अनुवाद किया। हमने 10 भाषाओं जिनमें बोडो, कश्मीरी और नेपाली शामिल हैं, में 8 अनुवाद कार्यशालाएँ आयोजित की और गैर-अंग्रेज़ी भारतीय भाषाओं में मूल रूप से लिखी गई पुस्तकों के संकलन पर ध्यान केंद्रित किया।

हम बच्चों के लिए अधिक से अधिक स्थानीय, प्रासंगिक और सहज सामग्री सक्रिय रूप से बनाते रहेंगे। हम यह भी देखते हैं कि स्टोरीवीवर ने पहले कभी न देखे गए तरीके से सामग्री के अनुकूलन और स्थानीयकरण के लिए एक मंच प्रदान किया है।

इस मंच ने बच्चों को उनकी अपनी मातृभाषाओं में रचित कहानियों के जादू को उजागर करने में मदद की है, चाहे वह मेघालय में खासी, गारो और पनार भाषाओं में उद्धृत लोककथाएँ हों या औरंगाबाद के स्कूलों के लिए उर्दू में जीवंत चित्र पुस्तकें हों या फिर गोवा में कोंकणी और मराठी भाषा में पढ़ने का कार्यक्रम हों। वर्तमान समय में, विभिन्न साझेदारियों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं पठन-पाठन की दिशा में अनेकों पहल करते हुए यह मंच एक बहुभाषी पठन आंदोलन का केंद्र बन गया है जिसमें 361 भाषाओं में 60,000 कहानियाँ उपलब्ध हैं। जिनमें से लगभग 60% वंचित भाषाएँ हैं।

जैसे ही हम अगले दशक में कदम रखेंगे, हमारा मुख्य प्रयास अपनी अध्ययन सामग्री को बच्चों के लिए अत्यधिक सुलभ एवं आसान बनाना होगा। भाषा इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए महत्त्वपूर्ण माध्यम है।

प्रथम बुक्स की टीम एवं ट्रस्टियों की तरफ से,

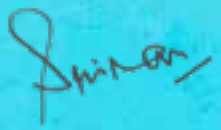

प्रो० एम०एस० श्रीराम
ट्रस्टी

बहुत सारी आवाज, बहुत सारी कहानियाँ

किताबें जादू की तरह होती हैं। वे पाठकों को अज्ञात स्थानों और उसके अद्भुत आयामों की सैर कराती हैं। साथ ही, वे पाठकों को जीवन की उन सुंदरताओं एवं जटिलताओं पर विचार करने में मदद करती हैं जिसमें हम जी रहे होते हैं। बच्चों को पढ़ाई के साथ एक सहज संबंध विकसित करने के लिए किताबों तक उनकी आसान पहुँच बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। पढ़ाई की दुनिया में पाठकों को मार्गदर्शन करने वाली पुस्तकें आनंदपूर्ण होने के साथ-साथ अर्थपूर्ण और बच्चों के लिए सहज भी हो सकती हैं। मातृभाषा में रचित पुस्तकें बच्चों के पठन को आसान बनाती हैं। किताबों की दुनिया और शब्दों की जादुई शक्ति पन्नों को जीवंत बना देते हैं और बच्चों की कल्पनाओं को उड़ान भरने का मौका देते हैं।

इस वर्ष, विभिन्न पुस्तकालयों के शिक्षकों एवं शिक्षाविदों के साथ बातचीत एवं विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त फीडबैक के आधार पर कंटेंट टीम ने एक योजना बनाई है। जिसके तहत स्थानीय भाषा में रची चित्र पुस्तकें, शब्दविरहित पुस्तकें, बालिका सशक्तिकरण, सामाजिक एवं भावनात्मक शिक्षा पर आधारित पुस्तकों के साथ-साथ अत्यधिक संख्या में पठन-पाठन सामग्री को विकसित एवं प्रकाशित करने की योजना है।

पिछले वर्ष, कंटेंट टीम द्वारा आयोजित 'रीड विद मी' कार्यक्रम में मातृभाषा एवं अधिकतम संख्या में पढ़ी जाने वाली पुस्तकों की आवश्यकता पर प्रमुख रूप से प्रकाश डाला गया। भारतीय नर्सरी कविताओं की दुनिया में गहराई से उतरते हुए कंटेंट टीम ने मराठी, गुजराती, तमिल, मैतेई, मलयालम, कोंकणी, कोरा, असमिया, कन्नड़ और बंगाली भाषा में दस अनोखी नर्सरी राइम पोस्टर तैयार किए। मूल रूप से हिन्दी में लिखी पुस्तक *'कैसे भगायें बुखार?'* इस वर्ष की खास प्रस्तुती रही। जिसे लवलीन मिश्रा ने लिखा एवं प्रिया कुरियन ने चित्रित किया है।

हमेशा की तरह, टीम ने असाधारण प्रतिभा के धनी रचनाकारों के साथ मिलकर काम किया। कई नई किताबें तैयार की गयी। जहाँ कहानी को सार्थक एवं उपयुक्त शब्दों तथा चित्रों की सटीक अभिव्यक्ति के माध्यम से व्यक्त किया गया।

ओगिन नयम लिखित *'जब सूर्या घर गयी'* एक जादुई शब्दरहित पुस्तक है जिसमें सूर्या पाठकों को अपने घर बुलाती है और हमें पता चलता है कि अस्त होने के बाद वह क्या करती है।

बच्चे देखने और समझे जाने के लिए लालायित रहते हैं और अक्सर कहानियाँ उन्हें कठिन भावनाओं को समझने में मदद करती हैं। क्षेत्रीय अनुरोधों के माध्यम से आई दो किताबें प्रकाशित हुई जिसमें पहली मातंगी सुब्रमणियन द्वारा लिखित एवं प्रोइती रॉय द्वारा चित्रित पुस्तक *'रोशनी से भरपूर'* है। दूसरी पुस्तक यामिनी विजयन द्वारा रचित और ओइन्द्री सी. द्वारा चित्रित 'बढ़ते बच्चों की किताब' है। कहानी *'रोशनी से भरपूर'* माता-पिता द्वारा बच्चों के साथ किए जाने वाले दुर्व्यवहार पर प्रकाश डालती है। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण विषय है जिसपर बहुत कम चर्चा होती है। *'बढ़ते बच्चों की किताब'* युवा पाठकों को रोचक और सूचनात्मक तरीके से किशोरावस्था के जटिल दिनों के लिए मानसिक रूप से तैयार करती है।

संबंधों में स्थायीपन चाहे वह प्राकृतिक दुनिया से हो या आपस का हो हमारे बचपन का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। कहानी *'यह सही नहीं है'* जिसे शबनम मीनवाला ने लिखा और प्रिंसी रावत ने चित्रित किया है ईर्ष्या और दोस्ती की कहानी है। कहानी *'नानी भूल गयी'* जिसे हिमांजली शंकर ने लिखा और अदिति आनंद ने चित्रित किया हैं, यादों और रिश्तों की एक कोमल दास्तान है। यह तीन पीढ़ी की महिलाओं को एक ही पृष्ठभूमि में उकेरती है जिनमें से एक अल्ज़ाइमर के साथ जी रही है।

युवान अवेस द्वारा रचित एवं रेशु सिंह द्वारा चित्रित *'कछुआ भृंग'* एक संवेदनशील कहानी है। यह कहानी एक ऐसे लड़के की है जो प्रकृति की अद्भुत सीखने की दुनिया में खुद को तलाशता है। नासा द्वारा वर्षों से खींची गई ओपन-सोर्स अंतरिक्ष तस्वीरों से प्रेरित होकर अपर्णा कपूर और बीजल वच्छराजानी ने *'अंतरिक्ष के नियम'* नाम से एक

दार्शनिक एवं मार्गदर्शिका लिखा हैं जो अंतरिक्ष यात्रा के दौरान क्या करें और क्या न करें इस कार्य पर रोशनी डालती है। इस कहानी का चित्रांकन कानातो जिमो ने किया है।

इस वर्ष कुछ और उल्लेखनीय पुस्तकें आयी जो सामुदायिक मैत्रीय भावनाओं पर आधारित हैं। कहानी *'सबसे खोटे दोस्त खरे'* जिसे सौम्या राजेन्द्रन ने लिखा और पार्वती सुब्रमणियन ने चित्रित किया है। यह एक ऐसी दोस्ती की कहानी है जो हमें खुद के होने की आज़ादी देती है। कहानी *'आज़ाद बहनें'* जिसे मेनका रमण ने लिखा और कृतिका सुसरला ने चित्रित किया, हास्य और गर्मजोशी से भरी एक कहानी है, जिसमें पायोशनी अपने संगीत के जुनून को आगे बढ़ाती है।

पिछले बीस वर्षों में विकसित, प्रथम बुक्स की विस्तृत पुस्तकों की सूची शब्दों और चित्रों के माध्यम से कहानी कहने का एक बहुमूल्य खजाना है। वैश्विक स्तर पर हो रहे बदलाव एवं समय की नजाकत को समझते हुए प्रथम बुक्स की टीम ने पुस्तकों की सूची पर पुनर्विचार करना आवश्यक समझा और कुछ शुरूआती पुस्तकों को पुनः चित्रित किया ताकि वर्तमान समय में वे पाठकों के लिए और भी आकर्षक बन सकें। इन प्रमुख पुस्तकों में रुक्मिणी बनर्जी द्वारा रचित एवं बाबाकिकी द्वारा चित्रित *'मेरा घर'* और *'मेरा दोस्त'*; कांचन बैनर्जी द्वारा लिखित एवं सलोनी चोपड़ा द्वारा चित्रित *'दीदी और मैं'*; मीरा तेंदुलकर द्वारा रचित और रिजुता घाटे द्वारा चित्रित *'मेरा बैट कहाँ है'* तथा संजीव जायसवाल 'संजय' द्वारा लिखित एवं तसनीम अमीरुद्दीन द्वारा चित्रित *'बरसा बादल'* आदि प्रमुख हैं।

इस वर्ष प्रथम बुक्स और सिंगापुर बुक काउंसिल के एशियन फेस्टिवल ऑफ चिल्ड्रन्स कंटेंट (एएफसीसी) 'बिल्ड योर बुक हैकाथॉन' का एक और सफल आयोजन हुआ। इस वर्चुअल हैकाथॉन में भारत, नेपाल, सिंगापुर, थाईलैंड, मलेशिया और ऑस्ट्रेलिया के प्रतिभागियों ने भाग लिया। दो दिनों में, चित्रकारों के नेतृत्व में 5 भाषाओं (हिंदी, तमिल, चीनी, वियतनामी और मलय) में छह किताबें तैयार की गईं। कुल 36 किताबें! हर किताब उन विचारों का उत्सव है जिन्हें हम आश्चर्य, जिज्ञासा और विविधता के साथ संजोते हैं।

हमारी टीम ने एएफसीसी सिंगापुर में शब्दरहित पुस्तकों और विविधता पर शोध पत्र भी प्रस्तुत किए। टीम को प्रतिष्ठित राष्ट्रीय संग्रहालय सिंगापुर और सिंगापुर कला संग्रहालय में लोगों के लिए 'द वर्ल्ड वी लिव इन, द वर्ड्स वी क्रिएट' नामक विविधता मार्गदर्शिका पर आधारित एक वर्चुअल वार्ता देने के लिए आमंत्रित किया गया। टीम ने एटीआरईई के कर्मचारियों और सृष्टि मणिपाल इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट, डिजाइन एंड टेक्नोलॉजी के छात्रों के साथ चित्र पुस्तकों के निर्माण के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की।

संपादक शिनिबाली मित्र सैगल एवं राधिका शेनॉय ने एनआईएसएसईएम के लिए जीवनी के महत्त्व विषय पर एक शोध-पत्र सह-लेखन में किया।

चित्र 1: प्रथम बुक्स टीम के सदस्य नीव बुक अवॉर्ड के विजेता सदफ़ सिद्दीकी और हबीब अली।

चित्र 2: एक कार्यशाला के लिए एटीआरईई, बेंगलुरु में प्रथम बुक्स की कंटेंट टीम।

चित्र 3: एशियन फेस्टिवल ऑफ चिल्ड्रन्स कंटेंट 2023 में संपादक स्मित ज़ावेरी और कला निर्देशक कानातो जिमो की स्केचबुक।

चित्र 4: कला निर्देशक और पुरस्कार विजेता चित्रकार कानातो जिमो बुकआरू बड़ौदा में।

चित्र 5: कहानी 'ब्यूटी इज़ मिसिंग' के लिए बिनोद कनोरिया पुरस्कार से सम्मानित प्रिया कुरियन।

चित्र 6: सृष्टि इंस्टीट्यूट ऑफ आर्ट डिज़ाइन एंड टेक्नोलॉजी के छात्रों के साथ पिक्चर बुक बनाने पर एक कार्यशाला।

पुरस्कार

ब्यूटी इज़ मिसिंग

मेहली गोभाई वर्ष 2023 के बाल पुस्तक चित्रकार पुरस्कार एफआईसीसीआई इंडिया पब्लिशिंग अवाइर्स, वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तक।

वेन वी आर होम

अट्टा गल्लट्टा-बैंगलोर लिटरेचर फेस्टिवल 2023:
सर्वश्रेष्ठ बाल चित्र पुस्तक कथा।

आवर ब्यूटीफुल वर्ल्ड

पब्लिशिंग नेक्स्ट इंडस्ट्री अवाइर्स 2023:
वर्ष की सर्वश्रेष्ठ बाल पुस्तक (8+ विजेता)।

पुरस्कार

हेलो सूरज

फेडरेशन ऑफ इंडियन पब्लिशर्स अवाड्र्स फॉर एक्सीलेंस इन बुक प्रोडक्शन 2023: बाल पुस्तकें, सामान्य रुचि, 0-10 वर्ष, क्षेत्रीय भाषाएँ - तमिल: द्वितीय पुरस्कार।

मार्इ स्ट्रीट

नीव बुक अवार्ड: प्रारंभिक पाठक

निराली दादी

रूम टू रीड चिल्ड्रेन्स लिटरेचर अवाड्र्स 2023: टीचर-लाइब्रेरियन चॉइस अवार्ड (3-8 वर्ष): उपविजेता।

पुरस्कार

गप्पू गोला

रूम टू रीड चिल्ड्रन्स लिटरेचर अवाड्र्स 2023:
साल की सर्वश्रेष्ठ चित्र पुस्तक।

मुफ्त की कुल्फी

रूम टू रीड चिल्ड्रन्स लिटरेचर अवाड्र्स 2023:
वर्ष का युवा लेखक पुरस्कार (उपविजेता)।

लाल परी

रूम टू रीड चिल्ड्रन्स लिटरेचर अवाड्र्स 2023:
टीचर-लाइब्रेरियन चॉइस अवाड्र्स (8-12 वर्ष) - उपविजेता।

कहानी, कथा, कहनी, क़िस्सा और बहुत कुछ

580+

अनुदित किताबें

11+

भाषाओं में अनुदित

4+

पुस्तकें गैर-अंग्रेजी भारतीय भाषा में

एक बहुभाषी प्रकाशक के रूप में, हम भारतीय भाषाओं में बच्चों के प्रकाशन के समृद्ध पारिस्थितिकी तंत्र को और सशक्त बनाने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। इस वर्ष, हमने अपने कैटलॉग को और अधिक भाषाओं में विस्तारित किया, अनुवाद के लिए विभिन्न वित्तीय संसाधनों की खोज की और कई गैर-अंग्रेजी भारतीय भाषा पुस्तकें तैयार करने के साथ-साथ भाषा-से-भाषा अनुवाद भी किए।

फिडेलिटी प्रोजेक्ट के तहत 11 भाषाओं में कुल 500 पुस्तकें तैयार की गईं। इनमें कश्मीरी, नेपाली, बोडो, असमिया, उर्दू और मणिपुरी भाषाएँ शामिल थीं। टीम ने अनुवादकों के साथ ऑनलाइन चर्चाओं के माध्यम से अनुवाद के तकनीकी और रचनात्मक पहलुओं पर सहयोग किया और विभिन्न भाषाओं में अनुवाद की गुणवत्ता को और ऊँचा उठाने में सफल रही।

गोंडी एक आदिवासी भाषा है जिसे भारत के सात राज्यों में 27 लाख से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती है। गोंडी भाषा में प्रकाशित चित्र-पुस्तकें गोंडी भाषी परिवार के बच्चों को कहानी पढ़ने में दोगुना आनंद प्रदान करती हैं साथ ही कक्षा में भाषाई परिवर्तन को भी आसान बनाती हैं। हमने शिक्षार्थ ट्रस्ट के साथ मिलकर 100 गोंडी पुस्तकों का सृजन किया। ये पुस्तकें छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले के संघर्ष प्रभावित क्षेत्रों में रहने वाले बच्चों तक पहुँचेंगी। (ss2)

पूर्वोत्तर के संदर्भों में चित्र पुस्तकों के सृजन के अपने व्यापक मिशन के तहत हमने पूर्वोत्तर के लेखकों और चित्रकारों द्वारा बनाई गई 20 पुस्तकों का असमिया में अनुवाद किया। यह अनुवाद एचटीपीएफ द्वारा वित्त पोषित था और राष्ट्रीय अनुवाद मिशन के सहयोग से पूरा किया गया।

पाँच कहानी कार्ड का अनुवाद आका ह्रुस्सो और सिंगफो भाषा में किया गया, ये दोनों ही लुप्तप्राय भाषाएँ हैं। इनका अनुवाद समुदाय के सदस्यों द्वारा अनुवादक और समीक्षक के रूप में किया गया और इस परियोजना का समन्वय लेखिका नबनीता देशमुख ने किया।

अत्यधिक मात्रा में अनुवाद कार्य सृजित हो इस मिशन के तहत, हमने पहली बार उत्तर-पूर्वी भाषाओं में पुस्तकों के अनुवाद के लिए एक क्राउडफंडिंग अभियान चलाया। कहानी *'बढ़ते बच्चों की किताब'* जो किशोर बच्चों के शरीर से जुड़े सवालों का समाधान करती है और *'साड़ी में बाबा'* जो एक रोमांचक कहानी के साथ-साथ घरेलू लैंगिक मानकों को भी तोड़ती है, का असमिया और बोडो भाषा में अनुवाद किया गया।

बच्चों को अपनी मातृभाषा में पढ़ने से मिलने वाला आनंद न केवल उन्हें पुस्तकों से गहराई से जोड़ता है बल्कि उनके पढ़ने और समझने की क्षमता को भी विकसित करता है और उनके कक्षा में प्रदर्शन में सुधार लाने में सहायक साबित हुआ है। भारत में बाल साहित्य में एक भारतीय भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद व्यापक रूप से नहीं किया जाता है। इसलिए हमने इस वर्ष इस चुनौती का सामना किया। हमारी एक भारतीय भाषा से दूसरी भारतीय भाषा में अनुदित पुस्तकों ने विभिन्न भाषाओं में मौलिक आवाज़ों को पहुँचाने में मदद की। इस वर्ष, मूल हिंदी पुस्तकों का मराठी, कन्नड़ और तमिल में सीधे अनुवाद किया गया।

हमने अपनी भाषाई पुस्तकों के लिए प्रसिद्ध वरिष्ठ अनुवादकों और साहित्य अकादमी पुरस्कार विजेताओं के साथ काम किया। *'एक होती इडली'* जिसका अनुवाद जयनाथ कैकिणी ने कन्नड़ में किया, ऐसी ही एक पुस्तक थी।

संगत रूप से उच्च गुणवत्ता वाली मौलिक और अनुदित पुस्तकों के निर्माण के लिए मानकीकरण और सर्वोत्तम प्रथाओं की समझ आवश्यक है। इस दिशा में, मांची पुस्तकम और मोहन पथिपाका (नेशनल बुक ट्रस्ट) के सहयोग से हमारे तेलुगु अनुवादकों के लिए ऑनलाइन सत्र आयोजित किए गए। साथ ही, तेलुगु अनुवाद की सर्वोत्तम प्रथाओं को शामिल करते हुए एक शैली पत्रक (स्टाइल शीट) भी विकसित किया गया।

हमारी मूल हिंदी पुस्तकों ने कई पुरस्कार जीते। अलंकृता अमाया ने *'रंग बिरंगी किताब'* के लिए रूम टू रीड का सर्वश्रेष्ठ लेखक पुरस्कार जीता। विष्णु एम. नायर ने *'गप्पू गोला'* के लिए रूम टू रीड का सर्वश्रेष्ठ चित्रकार पुरस्कार जीता। *'निराली दादी'* को रूम टू रीड से लाइब्रेरियन्स चॉइस अवार्ड मिला। [SS3]

हम कई राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय मंचों पर उपस्थित थे। इनमें एनसीईआरटी द्वारा आयोजित 'राष्ट्रीय पुस्तक संवर्धन के लिए दिशानिर्देश विकसित करना कार्यशाला; पुणे में भाषा फाउंडेशन द्वारा आयोजित साहित्य महोत्सव; क्राइस्ट यूनिवर्सिटी और सीआईआईएल द्वारा आयोजित राष्ट्रीय अनुवाद संगोष्ठी; और कन्नड़ दैनिक विजया कर्नाटक द्वारा आयोजित कन्नड़ में बच्चों की पुस्तकों पर एक पैनल चर्चा इत्यादि शामिल थी।

प्रथम बुक्स की किताबें हमारे स्कूल के बच्चों को बेहद पसंद आई। इन किताबों नें हमारे पढ़ने के समय को दिलचस्प बनाया है। हिन्दी चित्र पुस्तकों की यह दुनिया हमारे स्कूल के बच्चों के लिए बहुत नई है। अलग-अलग पठन स्तर के आधार पर बच्चे खुद अपनी किताबें चुनते और पढ़ते हैं। किताबों की कहानियाँ और भाषा बच्चों को अपने अनूकूल लगी।"

गीता रानी
शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय

चित्र 1: चिरंतना रंग अध्ययन केंद्र के संस्थापक किरण भट ने कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले के सिरसी के दूरस्थ गांवों में गीतों के साथ एक परस्पर संवादात्मक अध्ययन सत्र आयोजित किया।

चित्र 2: बच्चों ने पहली बार चित्र पुस्तक देखी! उन्होंने अपनी पसंदीदा पुस्तकों को पढ़ा और उनके बारे में ख़ुशी-ख़ुशी चित्र बनाए।

चित्र 3: हमारी अनुवादक वाणी पेरियोडी ने कर्नाटक के कोप्पल जिले में आयोजित एक ग्रीष्मकालीन शिविर में कहानी 'द मास्क' पढ़ी। बच्चों ने इस कहानी का आनंद लिया और बाद में मास्क बनाए।

चित्र4: दिल्ली के सर्वोदय कन्या विद्यालय की कक्षा 3 के बच्चे 'हैंगिंग लाइब्रेरी किट' से हमारी किताबों को उत्सुकता से देख रहे थे।

हर बच्चे के लिए एक कहानी

20M
ऑनलाइन रीड्स

361
भाषाएँ

60.3K
कहानियाँ

PRATHAM BOOKS storyweaver

डॉ. रूडिन सिम्स बिशप का प्रसिद्ध कथन हैं- "किताबें कभी-कभी खिड़कियाँ होती हैं जो हमें ऐसी दुनिया की झलक दिखाती हैं जो वास्तविक या काल्पनिक, परिचित या अजीब हो सकती हैं। ये खिड़कियाँ स्लाइडिंग ग्लास दरवाज़े भी होती हैं और पाठकों को बस अपनी कल्पना के सहारे उनमें प्रवेश करना होता है, ताकि वे उस दुनिया का हिस्सा बन सकें, जिसे लेखक ने बनाया या पुनः रचा है।" इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए, हमने कहानी-आधारित कार्यक्रमों को डिज़ाइन किया है जो पढ़ने के आनंद को बढ़ाने, बुनियादी साक्षरता को विकसित करने और हिंदी, मराठी, उर्दू एवं ओड़िया सहित अन्य भारतीय भाषाओं में युवा शिक्षार्थियों में STEM मानसिकता बनाने में मदद करेंगे। कहानी-आधारित शिक्षण पद्धति, जिसमें इस वर्ष हमने लगभग 15,000 शिक्षकों को प्रशिक्षित किया है, उसने सीखने में सुधार के सकारात्मक परिणाम बार-बार दिखाए हैं। इस वर्ष, राजस्थान के कोटा में 30 स्कूलों में हमारे STEM साक्षरता कार्यक्रम के तहत एक प्रायोगिक अध्ययन में छात्र मूल्यांकन अंकों में 33 प्रतिशत अंकों की वृद्धि देखी गई, जो 42% से बढ़कर 75% हो गई।

शिक्षा विभागों के सहयोग से लागू किए गए इन कार्यक्रमों को शिक्षकों और अभिभावकों दोनों से उत्साहपूर्वक स्वीकार किया गया है। सुश्री सविता साठे, जिला परिषद स्कूल, दहीवाड़ी, तुलजापुर ने फाउंडेशनल लिटरेसी प्रोग्राम के कार्यान्वयन के बाद कहा, "मैं देख सकती हूँ कि मेरी कक्षा में कमजोर बच्चे भी कहानी पुस्तकों का आनंद ले रहे हैं और पढ़ने के लिए उत्साहपूर्वक हाथ उठा रहे हैं।" पिछले वर्ष, यूनिसेफ और एमएससीईआरटी के सहयोग से हमने उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और गोवा में इन कार्यक्रमों को लागू किया है, जिससे 4,50,000 बच्चों को पढ़ने के आनंद के माध्यम से सीखने की नई राह खोलने में मदद मिली है।

मातृभाषाओं में आनंदमय पठन को प्रोत्साहित करने के लिए सहयोग अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। स्टोरीवीवर, जो लंबे समय से लेखकों, चित्रकारों, अनुवादकों, शिक्षकों और अभिभावकों के लिए एक साझा मंच रहा है, जहाँ वे पढ़ने के आनंद को बढ़ावा देने के लिए एक साथ आते हैं, ने इस वर्ष देशभर में पठन को प्रोत्साहित करने वाले एक राष्ट्रीय आंदोलन को सक्षम बनाने पर भी ध्यान केंद्रित किया।

विश्व कहानी दिवस (20 मार्च, 2023) के अवसर पर हमने बच्चों को साप्ताहिक रूप से पढ़कर सुनाने के लिए वयस्कों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से #GetChildrenReading अभियान शुरू किया। इस अभियान के तहत, समुदायों के लिए पढ़ने को रोचक और सुलभ बनाने के लिए विशेष रूप से चयनित कहानी पुस्तकें और संसाधन उपलब्ध कराए गए। हजारों प्रतिभागियों ने इस पहल के तहत साप्ताहिक पठन सत्र आयोजित किए, जिसमें सामुदायिक सहभागिता से कई अनूठे समाधान सामने आए, जैसे कि सुनने में असमर्थ बच्चों के लिए अमेरिकन साइन लैंग्वेज (ASL) में ऑडियो-विज़ुअल संसाधन उपलब्ध कराना। आर्चना अत्री, जो एए'स बुक नड्र्स की संस्थापक हैं और शब्दों को जीवंत बनाकर बच्चों के बीच पठन संस्कृति विकसित करने का प्रयास कर रही हैं। वे कहती हैं, "मेरे विचार में यही 'प्रथम बुक्स' के 'Get Children Reading' अभियान की आधारशिला है—बच्चों को पढ़कर सुनाना, उनके साथ पढ़ना, उन्हें पठन के आनंद से परिचित कराना और फिर उन्हें किताबों की दुनिया में स्वतंत्र रूप से अपनी यात्रा तय करने देना।"

अंत में हम कह सकते हैं कि स्टोरीवीवर में हम इस विश्वास के साथ हमेशा काम करते रहे हैं कि सभी समुदायों के लिए उनकी अपनी भाषाओं में प्रकाशन को समानता और समावेशिता के साथ सुलभ बनाया जाए। इसी दिशा में पहल करते हुए हमने सौरमंडला के 'द फॉरगॉटन फोकलोर प्रोजेक्ट' के साथ साझेदारी की, जिसका उद्देश्य मेघालय राज्य की आदिवासी लोककथाओं का दस्तावेज़ीकरण करना और उन्हें 45 जीवंत चित्र पुस्तकों के रूप में प्रस्तुत करना था। यह सिर्फ एक प्रकाशन परियोजना नहीं थी बल्कि एक सामुदायिक प्रयास था, जिसमें लोगों ने पीढ़ी दर पीढ़ी चली आ रही कहानियों का दस्तावेज़ीकरण किया। खासी, गारो और पनार भाषाओं में संकलित इन कहानियों में स्थानीय लोककथाओं का विस्तृत संकलन शामिल था। 'द गारमेंट सीरीज़' ने मेघालय की पारंपरिक वेशभूषा को प्रस्तुत किया, जहाँ हर पृष्ठ मेघालयी हस्तकला का एक रंगीन उत्सव था। एक अन्य कहानी, 'बाँस जर्नी इन म्यूज़िक', जिसे निदा हन्नियवता ने लिखा और अर्बन मावथोह ने चित्रित किया, वान्खेन गाँव में एक बच्चे की अपनी अनूठी 'सुर' खोजने की यात्रा को दर्शाती है। यह कहानी युवा और बुज़ुर्ग पाठकों दोनों के साथ गूंजती है। इस क्षेत्र के विविध पक्षी जीवन पर द्विभाषी पुस्तकों ने प्रकृति और कथा को आपस में पिरोया, जिससे बादलों से ढके इस पहाड़ी राज्य की सुंदरता शब्दों के जादू में हमेशा के लिए संजोई जा सकें। पहली बार कहानी लिखने और चित्र बनाने वाले स्थानीय रचनाकारों द्वारा रचित ये पुस्तकें सौरमंडला के मार्गदर्शन में विकसित की गईं। 'द फॉरगॉटन फोकलोर प्रोजेक्ट' यह सिद्ध करता है कि कभी-कभी सबसे शक्तिशाली सामाजिक परिवर्तन भव्य प्रयासों से नहीं बल्कि अपनी खुद की कहानी कहने से आता है।

यह वर्ष हमारे डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म की कहानी रही जहाँ सृजन से लेकर अनुवाद और विस्तार तक, हमने विभिन्न भागीदारों के साथ मिलकर काम किया और पढ़ने के प्रति प्रेम को बढ़ावा दिया। हमारा लक्ष्य यही रहा कि हर अंतिम बच्चे के हाथ में उसकी मातृभाषा में एक किताब हो, ताकि वह पढ़ने के आनंद को महसूस कर सकें।

चित्र 1: उर्दू में #GetChildrenReading अभियान में भाग लेते बच्चे।

चित्र 2: सौरमंडला 'द फॉरगॉटन फोकलोर प्रोजेक्ट' की कहानियाँ जो स्टोरीवीवर पर प्रकाशित हुई हैं।

चित्र 3: कोटा में STEM साक्षरता कार्यक्रम लागू किया जा रहा है।

चित्र 4: कोटा में STEM साक्षरता कार्यक्रम प्रशिक्षण में भाग लेते शिक्षक।

शब्दों की शक्ति प्रथम बुक्स

PRATHAM BOOKS
donate-a-book

2.1 लाख
से ज़्यादा बच्चों तक पहुँच

41,000
पुस्तकें वितरित की गईं

800
से ज़्यादा दानकर्ता

इस वर्ष हमारी टीम के अद्भुत प्रयासों ने व्यक्तियों, गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ), पुस्तकालयों और विभिन्न संगठनों को हमारी क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से जोड़ने में उल्लेखनीय सफलता हासिल की, जिससे अधिक से अधिक बच्चों तक कहानी की किताबें पहुँचायी जा सकीं। हमारी किताबें विभिन्न भाषाओं में भारत के दूरस्थ और वंचित क्षेत्रों में बच्चों तक पहुँचीं। प्रत्येक पुस्तक जो एक पाठक तक पहुँची, उसने जादू और खुशियों की एक नई दुनिया खोल दी और हम इस कार्य को बार-बार करने में सफल रहे!

बर्फ से ढके पहाड़ों और एक नदी से घिरे जम्मू और कश्मीर के एक सीमावर्ती शहर, ज़ंबूर पट्टन, उरी में एक प्राथमिक विद्यालय और उसके पड़ोसी स्कूलों को कहानी की किताबों का पहला पुस्तकालय मिला। बच्चे अपनी मातृभाषा उर्दू में पहली बार कहानी की किताबें पकड़कर और पढ़कर बेहद खुश हुए।

एक बेहतर वातावरण बनाने में हर किसी की भूमिका होती है, खासकर उन बच्चों के लिए जो देश के भविष्य हैं। प्रथम बुक्स को अपना योगदान देते हुए देखना प्रशंसनीय और हृदयस्पर्शी है। विभिन्न भाषाओं एवं संदर्भों को आत्मसात करते हुए प्रथम बुक्स द्वारा बनाई गई बाल-केंद्रित पुस्तकें अत्यंत सराहनीय हैं, इब्तिदा जैसी पहले राष्ट्र को एक साथ लाती हैं और बच्चों के लिए एक बेहतर समाज का निर्माण करती हैं।"

16वीं बटालियन, राजपुताना राइफल्स के मेजर अभिलाष शर्मा।

यूकैटापल्ट फाउंडेशन के संस्थापक एवं प्रबंध निदेशक प्रेमा मिश्रा ने महाराष्ट्र के जलगांव जिले के धारंगांव ग्रामीण क्षेत्र में एसटीईएम साक्षरता पुस्तकें प्रदान करने के लिए धन जुटाया। इन पुस्तकों को सोच-समझकर मौजूदा पाठ्यक्रम में शामिल किया गया, जिससे एसटीईएम (STEM) अवधारणाएँ छात्रों के लिए अधिक सुलभ और रोचक बनीं। साथ ही इनका उपयोग प्रधानाध्यापकों के प्रशिक्षण सत्रों में भी किया गया ताकि एसटीईएम शिक्षण के महत्त्व को उजागर किया जा सके।

अरुणाचल प्रदेश के म्वाया, गाँव पुली स्थित न्युबु न्युगम येरको स्कूल के बच्चों को डोनी पोलो सांस्कृतिक एवं चैरिटेबल ट्रस्ट की बदौलत आनंददायक कहानी की किताबें मिली। इस क्षेत्र की स्वदेशी समुदायों की परंपराओं को संरक्षित और बढ़ावा देने के लिए समर्पित इस ट्रस्ट ने 2022 में इस स्कूल की स्थापना की जो न्याशी जनजाति के विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करता है।

मणिपुर में अशांति के कारण बड़ी संख्या में बच्चे राहत शिविरों में चले गए जहाँ पुस्तकों तक उनकी कोई पहुँच नहीं थी। सेंटर फॉर कम्युनिटी इनिशिएटिव (CCI) ने लामका, मणिपुर और विभिन्न शिविरों में विस्थापित बच्चों के लिए एक समावेशी सामुदायिक शिक्षा केंद्र (iCLC) स्थापित किया है। प्रथम बुक्स की आनंददायक कहानी पुस्तकों का उपयोग इन कठिन समयों में बच्चों का समर्थन करने और उन्हें साहित्य और पुस्तक संबंधी गतिविधियों के माध्यम से व्यस्त रखने के लिए किया जा रहा है।

चित्र 1: अरुणाचल प्रदेश के मव्या में न्युबू न्यवगाम येरको के बच्चों के लिए किताबें

चित्र 2: मणिपुर के लामका में पुस्तकों के माध्यम से विस्थापित बच्चों को सशक्त बनाना।

चित्र 3 और 4: कश्मीर घाटी की पहली लाइब्रेरी जम्मू और कश्मीर के ज़म्बूर पट्टन के उरी में स्थापित की गई थी।

चित्र 5: जलगांव जिले के ग्रामीण धरनगांव में बच्चों के लिए STEM पुस्तकें।

कहानियों की उड़ान

~15 लाख
पुस्तकों का वितरण

50 लाख
से अधिक बच्चे तक पहुँच

6,400
कक्षाओं में पुस्तकालय

27
राज्यों और 6 केंद्र शासित प्रदेशों

245+
संस्थाओं में वितरण

‘हर बच्चे के हाथ में एक किताब हो’ इस लक्ष्य को पूरा करने और बच्चों की पुस्तकों तक पहुँच स्थापित करने में प्रथम बुक्स की टीम ने विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों एवं उसके विविध भाषाओं पर अद्भुत ढंग से काम किया है। हमने अपनी पुस्तकों को नए स्थानों तक पहुँचाने और शिक्षकों के जीवन के विविध पहलुओं को छूने में महत्त्वपूर्ण प्रगति की है। एक उल्लेखनीय उपलब्धि उन भाषाओं में पुस्तकें और कहानी कार्ड उपलब्ध कराना था जिनमें हमने पहले काम नहीं किया था, जिनमें से कुछ लुप्तप्राय भाषाएँ हैं, या ऐसी भाषाएँ जिनके मूल वक्ताओं की संख्या लगातार कम होती जा रही है।

दो लुप्तप्राय भाषाओं अका हरुससो एवं सिंगफो में 3500 कहानी कार्ड मुद्रित एवं वितरित किए गए। अका हूसो अरुणाचल प्रदेश में केवल 4 हजार लोगों द्वारा बोली जाती है तथा सिंगफो असम में केवल 3 हजार लोगों द्वारा बोली जाती है।

छत्तीसगढ़ के सुकमा जिले में सरकारी स्कूलों के साथ काम करने वाले शिक्षार्थ ट्रस्ट के लिए पहली बार गोंडी भाषा में 92 कहानी पुस्तकें मुद्रित की गई। 266 गोंडी ‘लाइब्रेरी इन ए क्लासरूम’ किट भी वितरित किए गए।

हमारी 20वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में एक नया उत्पाद ‘खुशियों का खजाना’ लॉन्च किया गया। हमने अंग्रेजी, हिंदी, मराठी और कन्नड़ में 1600 बॉक्स सेट मुद्रित किए।

‘अर्ली लर्नर लाइब्रेरी’ में 60 पठन संसाधन शामिल थे, जिन्हें 6 भाषाओं (अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती, मराठी, कन्नड़ और तेलुगु) में वितरित किया गया।

देश भर के बच्चों तक हमारी पुस्तकों और शिक्षण उत्पादों को ले जाने वाली कई साझेदारियाँ थीं। सीएआरआईटीएएस इंडिया के ‘खुशहाल बचपन’ कार्यक्रम के माध्यम से, जो मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के दूर दराज़ के क्षेत्रों में फैला हुआ है, 4173 से अधिक बच्चों तक पहुँचाया गया। साथ ही, 85 से अधिक अकादमिक मार्गदर्शकों की क्षमताओं

का विकास किया गया, जिन्होंने हमारे पुस्तकों का उपयोग करके बच्चों को पढ़ाया और उनके ज्ञान को बढ़ाया।

प्रथम बुक्स की हैंगिंग लाइब्रेरी बाल चौपालों के लिए एक महत्त्वपूर्ण संसाधन बनी। कुल 52 'लाइब्रेरी इन ए क्लासरूम' वितरित की गईं।

एक सामुदायिक शिक्षक कहते हैं :

जब मैंने बच्चों को पुस्तकालय का परिचय कराया तब मैंने कहानी की किताबें पढ़ने के प्रति बच्चों के उत्साह में जबरदस्त वृद्धि देखी। यह अवसर मिलने पर कि वे जोर से पढ़ सकते हैं, लगभग हर कोई उत्सुकता से भाग लेने लगा, बारी-बारी से पढ़ते और एक-दूसरे को गर्व के साथ सुनते। यह उनके लिए एक ऐसा अनुभव था जो उन्होंने पहले कभी नहीं किया था।"

कहानी सुनाना 'नव सहयोग फाउंडेशन' के मुख्य कार्यक्रम का एक हिस्सा है और हर शनिवार को एक घंटे के लिए सत्र आयोजित किया जाता है। प्रत्येक गाँव से एक गाँव समन्वयक नियुक्त किया जाता है जो इन सत्रों का संचालन करता है। गाँव समन्वयक ने बच्चों को कहानियाँ सुनाने के लिए प्रथम बुक्स के विभिन्न स्तरों का उपयोग किया। यह फाउंडेशन वर्तमान में कर्नाटक, तमिलनाडु और नगालैंड के 300 गाँवों में सक्रिय है और प्रतिदिन 9000 से अधिक बच्चों को जोड़ रहा है।

थिंकशार्प फाउंडेशन के बुक मित्र कार्यक्रम के तहत स्कूलों में पुस्तकालय स्थापित किए जाते हैं। प्रत्येक पुस्तकालय में मराठी और अंग्रेजी भाषाओं में विभिन्न विषयों पर प्रथम बुक्स की पुस्तकें हैं। बुक मित्र कार्यक्रम में कुल 36,000 पुस्तकों का उपयोग किया गया।

'इंडी विलेज फाउंडेशन' कहानी कहने की शिक्षाशास्त्र के माध्यम से प्रारंभिक वर्षों में सीखने के अंतर को पाटने के लिए स्टोरीटेलिंग सैटरडे कार्यक्रम चलाता है। उन्होंने 'लाइब्रेरी इन ए क्लासरूम' किट के माध्यम से 6218 बच्चों को प्रभावित करते हुए 35 मिनी पुस्तकालय स्थापित किए।

इंडी विलेज फाउंडेशन टीम के अनुसार :

"जब हमने अपने सहयोगी स्कूलों में पुस्तकालय दिवस मनाया तो बच्चों की आँखों में कहानी की किताब प्राप्त करने की उत्सुकता और चमक देखने लायक थी। ये क्षण हमें यह विश्वास दिलाते हैं कि हमारा यह प्रयास समाज में सार्थक प्रभाव डाल रहा है। हम प्रथम बुक्स के साथ अपने सहयोग को अत्यंत महत्त्व देते हैं और ग्रामीण भारत में युवा शिक्षार्थियों को सशक्त बनाने के सामूहिक मिशन को आगे बढ़ाने के लिए उत्साहित हैं।"

सीआईएनआई ओडिशा ने ओडिशा के रायगड़ा जिले में सरकारी स्कूलों और आंगनवाड़ियों में पुस्तकालय स्थापित किए हैं। हमने सीआईएनआई के साथ सहयोग किया और ओड़िया एवं कुई भाषा में 34,000 से अधिक किताबें वितरित की जिससे 57,000 बच्चों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा। कुई एक आदिवासी भाषा है और इस भाषा में बच्चों के लिए शायद ही कोई साहित्य उपलब्ध है। इसलिए इन पुस्तकों के माध्यम से बच्चों के पढ़ने की यात्रा में यह एक बड़ा कदम था।

प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन, छत्तीसगढ़ ने छत्तीसगढ़ के 4 ब्लॉकों के 430 गाँवों को सम्मिलित करते हुए समुदायों में हैंगिंग लाइब्रेरी स्थापित किया जिससे 10 हजार बच्चे लाभान्वित हुए।

सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस (CmF), टाटा ट्रस्ट का एक सहयोगी संगठन, राजस्थान, भारत में स्थित एक गैर-लाभकारी संस्था है। इन्होंने अपने कार्यक्रम 'पुस्तकालय संसाधनों तक पहुँच' के माध्यम से बच्चों को कहानी पुस्तकों तक बेहतर पहुँच दिलायी है। इस परियोजना के तहत, बच्चे कहानियों का आनंद लेते हैं, विभिन्न प्रकार की पाठ्य सामग्री पढ़ते हैं और पुस्तकालय की गतिविधियों में भाग लेते हैं। इस पहल का समर्थन प्रथम बुक्स द्वारा किया गया जिसमें 23,000 पुस्तकों का उपयोग किया गया।

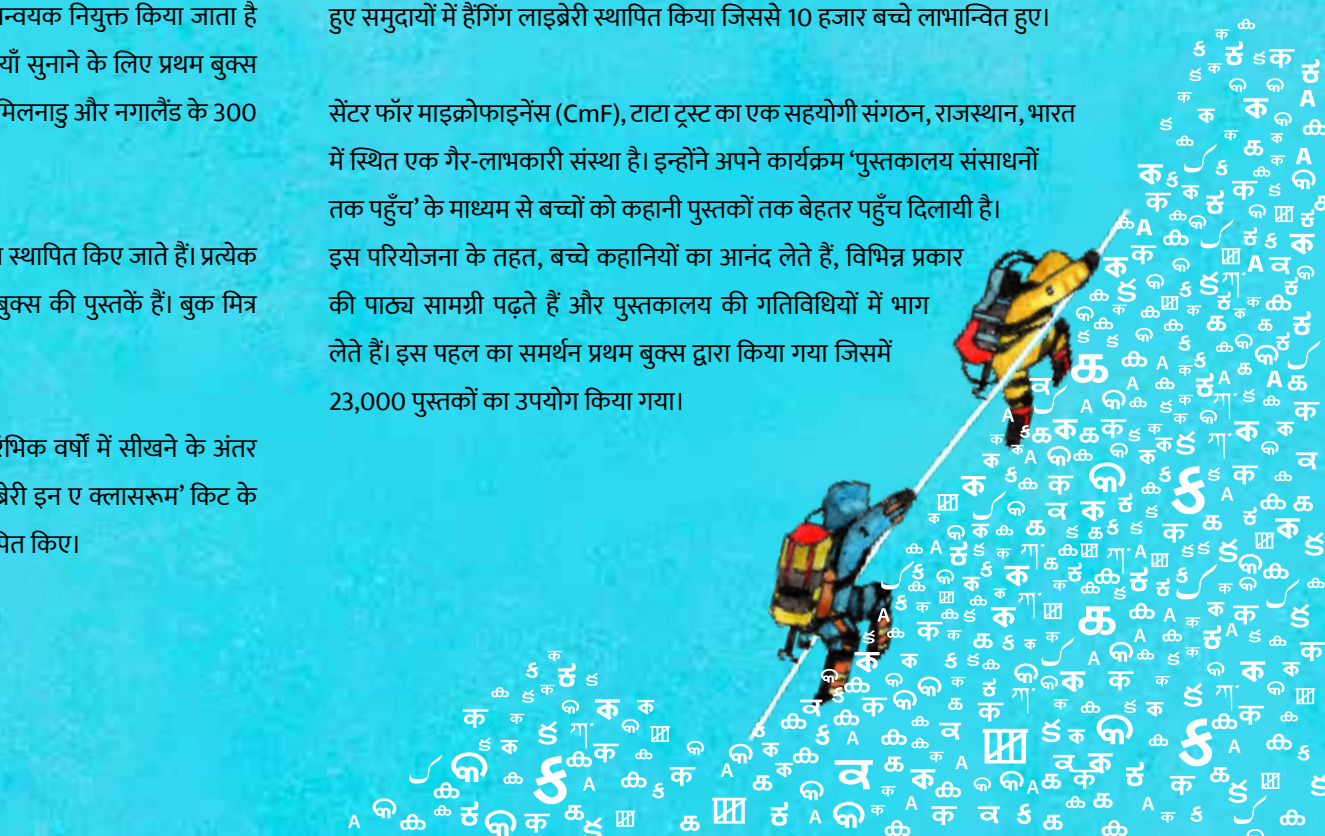

हमने अपनी एक कक्षा को पुस्तकालय में बदल दिया है और प्रत्येक कक्षा के बच्चों को बारी-बारी से एक पूरा दिन पुस्तकालय में बिताने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, मैं हर सुबह प्रार्थना सभा के दौरान दो कहानियाँ सुनाती हूँ। बच्चे अपनी सुबह की कहानियों की ज़िद करते हैं और यह सब हमारी प्रधानाध्यापिका श्रीमती अर्चना सिंह के समर्थन से संभव हो पाया है।"

निगार खानम, पुस्तकालय शिक्षिका, सरकारी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय कर्मोदा, सवाई माधोपुर।

कुछ प्रमुख संस्थागत ग्राहक थे : रूम टू रीड इंडिया ट्रस्ट, प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन, अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन फॉर डेवलपमेंट, डीमार्ट फाउंडेशन, इंडिया लिटरेसी प्रोजेक्ट, एचसीएल फाउंडेशन, यूनाइटेड वे, नव सहयोग फाउंडेशन, थिंकशार्प फाउंडेशन, सीआईएनआई, भारती फाउंडेशन, बुक्स फॉर ऑल ट्रस्ट, सेंटर फॉर माइक्रोफाइनेंस, लर्निंग लिंक्स फाउंडेशन, एस्पायर, कोटक एजुकेशन फाउंडेशन, रमन कांत मंजुल फाउंडेशन, अध्ययन क्वालिटी एजुकेशन फाउंडेशन, द जेसीबी लिटरेचर फाउंडेशन, लीडरशिप फॉर स्किल एजुकेशन फाउंडेशन आदि।

हमारे प्रमुख सरकारी ग्राहक झारखंड शिक्षा परियोजना, गुमला (झारखंड) के थे। एकीकृत जनजातीय विकास एजेंसी जनजातीय कल्याण विभाग, जिला उत्नूर, तेलंगाना। समग्र शिक्षा, दादरा और नगर हवेली और दमन और दीव।

कुछ प्रमुख खुदरा विक्रेता जिनके नाम इस प्रकार हैं : किंगमोर, माइंडवर्थ, समृद्धि एंटरप्राइजेज, लोकायत प्रकाशन, लाइट रूम बुकस्टोर, हिमांशु बुक डिपो, फंकी रेनबो, क्रिएटिव लर्निंग ऐड्स, ज्ञानजागर, नंदा इंटरप्राइजेज, अट्टा गलाटा, बुकवर्म लाइब्रेरी, यूरेका बुक्स, कहानी ट्री और ट्रिलॉजी इत्यादि थे।

चित्र 1 और 2: राजस्थान में सीएआरआइटीएएस इंडिया द्वारा आयोजित माता-पिता के साथ समूह वाचन और कहानी समय।

चित्र 3: पुस्तकालय अवधि के दौरान पुस्तकों की दुनिया में खो जाने के लिए उत्साहित छात्र।

चित्र 4: एस्पायर द्वारा आयोजित सामुदायिक पुस्तकालय पठन कार्यक्रम में कहानी सत्र का नेतृत्व करता एक छात्र।

चित्र 5: कर्नाटक के रायचूर और आंध्र प्रदेश के येम्मिगनूर में इंडीविलेज फाउंडेशन द्वारा आयोजित पठन सत्रों का आनंद लेते बच्चे।

पाठकों एवं नागरिकों का सृजन

50
पुस्तकों के निर्माण में साझेदारी

महाराष्ट्र में
2,500 STEM पुस्तकालय

1,200
स्कूलों में 'गोवा इज रीडिंग' कार्यक्रम संपन्न

जनजातीय भाषाओं में
200 पुस्तकालय

हमारे दाताओं के निरंतर समर्थन से हमें अपनी पुस्तकों के लगातार सृजन और वितरण में सहायता मिली। हमें जो अनुदान मिले, उनसे हम भारत के सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों के साथ और भी अधिक आनंददायक कहानियाँ ला सके। हम व्यापक अनुवाद परियोजनाओं को शुरू कर सके और यह सुनिश्चित कर सके कि हमारी पुस्तकें देश भर में कई और बच्चों तक पहुँचे। आज का पाठक कल का जिम्मेदार और विचारशील नागरिक है, और दाताओं की उदारता से संचालित हमारी विविध प्रकार की पुस्तकें इस वादे को पूरा करने के लिए कई और पाठकों तक पहुँचीं।

कैटरपिलर ने मुंबई के बीएमसी स्कूलों और छत्रपति संभाजीनगर, महाराष्ट्र के जिला परिषद स्कूलों में 2500 से अधिक STEM पुस्तकालयों के वितरण में सहायता की। इससे 3,00,000 से अधिक बच्चों को लाभ मिला और यह पहल इस वर्ष हमारे सबसे बड़े अनुदानों में से एक रही।

यूएसटी ग्लोबल वेलफेयर फाउंडेशन ने कोयंबटूर के करमड़ई क्षेत्र में सरकारी स्कूलों में 100 पुस्तकालयों की स्थापना का समर्थन किया, जिससे गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक संसाधनों तक पहुँच और अधिक विस्तारित हुई।

बैंगलोर में, शॉपिफाई कॉमर्स इंडिया ने अनेकल ब्लॉक के सरकारी स्कूलों में 185 पुस्तकालयों की स्थापना को प्रायोजित किया, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में छात्रों के लिए शैक्षिक सामग्री की उपलब्धता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई।

हमारे क्लाउडेरा डेटा प्लेटफ़ॉर्म, इंडिया के साथ नए सहयोग के तहत बेंगलुरु के सरकारी स्कूलों में 93 पुस्तकालय स्थापित किए गए।

एचटी पारेख फाउंडेशन ने अपनी सूक्ष्मदर्शी पहल के तहत असम, छत्तीसगढ़ और गुजरात में बच्चों की पुस्तकों के अनुवाद, सृजन और प्रसार का समर्थन किया, जिससे इन क्षेत्रों में पुस्तकालयों और बाल साहित्य को समृद्ध बनाया गया। यह हमारी मातृभाषा की पुस्तकों के कैटलॉग के लिए एक बहुत बड़ा समर्थन था।

यह हमारा लगातार दूसरा वर्ष था जब एंफसे सोलर एनर्जी ने तेलंगाना में 200 पुस्तकालयों की स्थापना में सहयोग दिया।

P.A.N.I. फाउंडेशन 2012 से हमें कई भाषाओं में नई सामग्री विकसित करने में मदद कर रहा है। इस वर्ष भी, हमारे नवीनतम सहयोग ने 5 भाषाओं में 3 नई पुस्तकों के निर्माण में सहायता की।

टाटा ट्रस्ट्स जो 2012 से हमारे मूल्यवान साझेदार रहे हैं, ने मराठी, कन्नड़ और अंग्रेजी में 6 नई भाषा-प्रथम पुस्तकों के विकास में सहायता की, जिसमें 30,000 प्रतियों की छपाई और स्कूली बच्चों तक वितरण शामिल था।

नवंबर 2022 में शुरू हुआ इंडस टावर्स प्रोजेक्ट 'गोवा इज़ रीडिंग' कार्यक्रम के साथ संपन्न हुआ, जिसका उद्देश्य सरकारी और सरकार-सहायता प्राप्त स्कूलों के छात्रों में पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना था। यह दोहरे हस्तक्षेप के माध्यम से किया गया जिसमें अंग्रेजी, मराठी और कोंकणी में एक डिजिटल रीडिंग प्रोग्राम और 'लाइब्रेरी-इन-अ-क्लासरूम' (LIC) मॉडल का उपयोग करके भौतिक रीडिंग कॉर्नर्स की स्थापना करना था।

इस कार्यक्रम ने 1,200 स्कूलों तक पहुँच बनाई, 2,01,600 कहानी किताबें प्रदान की और 78,800 छात्रों का सहयोग किया। इसने बहुभाषी पुस्तकों और गतिविधियों के एक विशेष रूप से तैयार सेट की पेशकश की, जिसे शिक्षक प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण प्रयासों द्वारा समर्थित किया गया। इस परियोजना ने शिक्षकों एवं छात्रों को एक-दुसरे के साथ सफलतापूर्वक जोड़ा। विविध संसाधनों जैसे; डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म एवं भौतिक पुस्तकों का उपयोग कर अध्ययन के प्रति रुचि को प्रोत्साहित किया गया ।

चित्र 1: अनेकल ब्लॉक, बैंगलोर के सरकारी स्कूलों में प्रथम बुक्स की लाइब्रेरी की स्थापना।

चित्र 2: गुजरात के वंकल में सरकारी स्कूल के बच्चों को लाइब्रेरी इन क्लासरूम के ज़रिए पढ़ने का आनंद मिला।

चित्र 3: असम के नागांव जिले में कथा कानन लाइब्रेरी के बच्चे अपनी नई क्लासरूम लाइब्रेरी के साथ।

चित्र 4: असम के कामरूप (मेट्रोपॉलिटन) जिले में स्नेहजोरी द्वारा समर्थित स्कूलों और समुदायों के बच्चे अपनी प्रथम बुक्स की लाइब्रेरी से मिलकर रोमांचित हैं

प्रथम बुक्स के दो दशक पूरे होने का जश्न

जनवरी 2004 में प्रथम बुक्स ने, 'हर बच्चे के हाथ में एक किताब' के उद्देश्य से प्रेरित होकर एक बाल प्रकाशन संस्थान के रूप में अपनी इस खूबसूरत यात्रा की शुरुआत की। संस्थापक रोहिणी निलेकणी कहती हैं, "हम सभी बच्चों के बीच पढ़ने के आनंद को लोकतांत्रिक बनाना चाहते थे। हम सभी भारतीय भाषाओं में जहाँ तक संभव हो सके वहाँ तक स्थानीय सामग्री के समायोजन से अद्भुत एवं विविध पुस्तकें बनाना चाहते थे और हमने यह कर दिखाया!"

समर्पण के दो दशक।

20 वर्षों से, हमारा यह अटूट मिशन दुनिया भर के बच्चों के लिए एक जीवंत पठन पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण कर रहा है। इस यात्रा को हमारे हितधारकों—लेखकों, अनुवादकों, चित्रकारों, शिक्षकों, पुस्तकालयाध्यक्षों, माता-पिता, दाताओं और पठन समर्थकों—की प्रतिबद्धता, जुनून और रचनात्मकता ने शक्ति प्रदान की है।

हमारी प्रकाशन सूची हमारी सफलता का प्रमाण है। सह-संस्थापक अशोक कामत प्रेमपूर्वक याद करते हैं,

हमारी पहली किताबें जो 2004 में प्रकाशित हुई थीं, अब तक कम से कम दर्जनभर बार पुनर्मुद्रित हो चुकी हैं। हजारों बच्चों के लिए, वे उनकी पहली किताबें थीं। हमने उनकी कीमत केवल पाँच रुपये रखी थी ताकि वे सभी के लिए सुलभ हों।"

कहानियों के माध्यम से बाधाओं को तोड़ना

प्रथम बुक्स की बहुभाषी और समावेशी दृष्टि ने लाखों बच्चों के लिए किताबों को सुलभ बनाया है। सावधानीपूर्वक तैयार की गई चित्र पुस्तकों और कक्षा पुस्तकालयों के माध्यम से हमने दूरदराज के गाँवों, पहाड़ी स्कूलों और आदिवासी समुदायों के बच्चों तक पढ़ने का आनंद पहुँचाया है।

ट्रस्टी सुजैन सिंह कहती हैं, *"प्रथम बुक्स ने एक अनूठा प्रकाशन मॉडल तैयार किया, जो बहुभाषी, किफायती और ओपन-सोर्स है। अब दुनिया भर के लाखों बच्चे हमारी किताबों तक मुफ्त में पहुँच सकते हैं।"*

हमारी नूतन गतिविधियां एवं नवाचार यहीं तक नहीं रुके है बल्कि स्टोरीवीवर जो कि हमारा डिजिटल प्लेटफॉर्म है उसने वैश्विक स्तर पर कहानियों की पहुँच के संदर्भ को बदल दिया है। स्टोरीवीवर जो कि हमारा डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म है उसने वैश्विक स्तर पर कहानियों की पहुँच को बदल दिया है। सह-संस्थापक रेखा मेनन कहती हैं, "हमने शुरुआत में ही सामाजिक भलाई के लिए तकनीक के उपयोग की शक्ति को पहचान लिया था।" आज, स्टोरीवीवर साक्षरता और सीखने की बाधाओं को पार करते हुए कई भाषाओं में लाखों पाठकों तक पहुँच रहा है।

पढ़ने के माध्यम से जीवन में बदलाव।

पिछले दो दशकों में हमने कहानियों की परिवर्तनकारी शक्ति को देखा है जो कल्पनाओं को प्रज्ज्वलित करती हैं, सहानुभूति को बढ़ावा देती हैं और पढ़ने के प्रति आजीवन प्रेम जगाती हैं। अध्यक्ष आर. श्रीराम स्वीकार करते हैं,

हम अपने लेखकों, चित्रकारों, अनुवादकों, स्वयंसेवकों, साझेदारों, दाताओं और समर्थकों के समुदाय का हार्दिक धन्यवाद करते हैं, जिन्होंने हमारे मिशन को आगे बढ़ाने में योगदान दिया। आपकी सहायता से हम दुनिया भर के वंचित और जरूरतमंद बच्चों तक पहुँच सके हैं।"

हमारे मूल्यों में निहित एक भविष्य।

जैसे-जैसे दुनिया अभूतपूर्व गति से बदल रही है, हमारे मूल सिद्धांत, मिशन, हमारे मूल्य और नवाचार के प्रति हमारी प्रतिबद्धता अटल बने हुए हैं। प्रथम बुक्स सहयोग, समावेशिता, रचनात्मकता और सहानुभूति के लिए प्रतिबद्ध बना हुआ है।

हम मिलकर आगे बढ़ रहे हैं—यह सुनिश्चित करते हुए कि कोई भी बच्चा पुस्तकों की शक्ति के अनुभव से वंचित न रह सके।

दानदाता

Azim Premji University

P-A-N-I Foundation
giving hope a chance

[e] enphase ENERGY

KEMIN
Compelled by Curiosity™

unicef
for every child

U · S T

indus TOWERS

Vereint für eine bessere Zukunft
Nitya Bal Vikas Deutschland e.V.

H T Parekh FOUNDATION

TATA TRUSTS

CLOUDERA

दानदाता

अध्ययन क्वालिटी एजुकेशन फाउंडेशन

आशाज्योति यूएसए आईएनसी

ब्राइट फंड

एजुकेशन एबव ऑल (EAA)

एजुकेशन इनिशिएटिव्स प्राइवेट लिमिटेड

फिडेलिटी एशिया पैसिफिक फाउंडेशन

गिव फाउंडेशन

गिव फाउंडेशन इंक, यूएसए

जैस्मिन इन्फोटेक प्राइवेट लिमिटेड

किंग बॉडुआइन फाउंडेशन

कैटरपिलर इंडिया इंजीनियरिंग सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड

लाइफरेरियन एसोसिएशन

नवनीत फाउंडेशन

एनडीआर इनविट मैनेजर्स

परसिस्टेंट फाउंडेशन

सौरमंडला फाउंडेशन

शॉपिफाई कॉमर्स इंडिया प्राइवेट लिमिटेड

द ऑनलाइन गिविंग फाउंडेशन

यूकैटापल्ट फाउंडेशन

यूके ऑनलाइन गिविंग फाउंडेशन

यूनाइटेड वे बेंगलुरु

व्यक्तिगत दानदाता सूची (2023–2024)

यदि आप हमारे साथ जुड़कर पढ़ाई के आनंद को फैलाने के हमारे प्रयासों में भागीदार बनना चाहते हैं, तो कृपया हमें grants@prathambooks.org पर लिखें।

वित्तीय

Pratham Books

Balance sheet as at March 31, 2024

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch No.	As at March 31, 2024 Amount	As at March 31, 2023 Amount
Liabilities			
Corpus Fund	1	11,47,17,119	10,11,68,543
Specified Fund	2	73,66,019	5,03,01,352
Current Liabilities	3	1,60,15,456	1,55,66,256
Provisions	4	46,26,718	41,07,473
Other advances	5	21,65,806	6,20,585
Total		**14,48,91,118**	**17,17,64,209**
Assets			
Fixed Assets	6	19,80,392	24,41,933
Deposits	7	8,46,43,096	9,63,56,774
Debtors	8	34,70,991	29,94,427
Loans and advances	9	23,06,917	10,57,771
Stock of Books		83,22,808	63,93,640
Cash in Hand		15,762	13,440
Cash at Bank	10	4,44,69,456	5,59,18,084
Specified Fund Receivable	11	1,30,000	2,60,003
Other Current Assets	12	3,31,696	63,29,737
Total		**14,48,91,118**	**17,17,64,209**

Significant Accounting Policies and notes to accounts 30

for Pratham Books

R Sriram
Chairperson

Suzanne Singh
Trustee

Bengaluru
September 20, 2024

As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/S200358

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: 235431
UDIN: 24235431BKEMXC5342

Bengaluru
September 20, 2024

Pratham Books

Income & Expenditure for the year ended March 31, 2024

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch No.	As at March 31, 2024 Amount	As at March 31, 2023 Amount
Income			
Sale of Books	13	8,78,87,601	7,22,51,678
Donations received	14	59,15,192	79,73,670
Other Income	15	87,22,965	76,56,613
Income from Funds	16	4,48,99,969	7,96,43,198
Total (A)		**14,74,25,727**	**16,75,25,159**
Expenditure			
Book Development Expenses	17	2,91,23,267	2,80,22,882
Selling & Administrative Expenses	18	2,27,51,808	1,94,58,435
Staff Expenses	19	3,69,18,922	2,47,53,402
Promotional Expenses	20	2,47,544	3,94,861
Depreciation	6	5,07,823	4,37,604
Fund Expenditure	21	8,67,17,139	10,06,12,911
Total (B)		**17,62,96,500**	**17,38,90,094**
Excess of Income over expenditure (A-B)		(2,88,70,773)	(63,64,935)
Add:			
Opening Balance in Funds			
Opening Balance in Corpus Fund		10,11,68,543	8,65,63,766
Opening Balance in Specified Fund		5,03,01,352	7,17,35,207
Balance of Funds after appropriations			
Corpus Fund		11,47,17,120	10,11,68,543
Specified Fund		73,66,019	5,03,01,352
Total balance in Funds		**12,20,83,139**	**15,14,69,895**

Significant Accounting Policies and notes to accounts 30

for Pratham Books

R Sriram
Chairperson

Suzanne Singh
Trustee

Bengaluru
September 20, 2024

As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/S200358

UDIN: 24235431BKEMXC5342

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: 235431
UDIN: 24235431BKEMXC5342

Bengaluru
September 20, 2024

वित्तीय

Pratham Books

Receipts and Payments account for the year ended March 31, 2024

(Amount in Rupees)

Particulars	Sch No.	Year ended March 31, 2024 Amount	Year ended March 31, 2023 Amount
Receipts			
Balance brought forward			
- Cash on hand		13,440	8,740
- Cash at bank		3,09,18,084	5,56,25,623
Sale of books	22	8,98,95,914	7,60,21,404
Donations	23	89,18,192	79,73,670
Other income	24	57,68,936	46,96,420
Specified Funds	25	4,68,22,888	7,95,20,216
Fixed Deposits - Withdrawn		19,93,31,224	11,57,24,694
Gratuity Fund (LIC)		1,42,213	-
Earnest Money Refund Received		-	72,141
Income Tax Refund - Received (TDS)		-	15,20,381
Total		**40,58,08,872**	**34,29,72,096**
Payments			
Book Development Expenses	26	3,68,14,910	3,06,72,715
Selling, Administrative Expenses and Promotional Expenses	27	3,23,51,149	1,87,55,001
Staff Expenses	28	3,94,13,621	3,35,82,798
Fund Expenditure	29	9,14,40,264	9,88,75,433
Fixed Assets Purchased		3,06,960	8,27,933
Fixed Deposits		18,76,17,047	11,13,88,813
Gratuity- LIC Policy		10,00,000	13,14,641
Specific Grant Balance Refund		1,75,302	7,24,246
Earnest Money/Security Deposit		-	81,000
Balance carried forward			
- Cash on hand		15,743	13,440
- Cash at bank		4,44,49,456	3,09,18,084
Total		**40,58,08,872**	**34,29,72,096**

Significant Accounting Policies and notes to accounts 30

for Pratham Books

[illegible]
Chairperson

[illegible] Singh
Trustee

Bengaluru
September 20, 2024

UDIN: [illegible]
As per our report of even date
for Singhvi Dev & Unni LLP
Chartered Accountants
Firm Reg No 003867S/S200038

Shashi Kumar H D
Partner
Membership No.: [illegible]
UDIN: [illegible]

Bengaluru
September 20, 2024

बोर्ड्स ऑफ़ ट्रस्टीज

नाम	पद	बैठक में शामिल सदस्य	ट्रस्टियों द्वारा प्राप्त पारिश्रमिक/ प्रतिपूर्ति
अशोक कामत	ट्रस्टी	4	शून्य
हरित नागपाल	ट्रस्टी	3	शून्य
मिनाक्षी रमेश	ट्रस्टी	1	शून्य
एमएस श्रीराम	ट्रस्टी	3	शून्य
परवीन वर्मा	ट्रस्टी	2	शून्य
श्रीकांत नादमुनी	ट्रस्टी	2	शून्य
सुजैन सिंह	ट्रस्टी	3	शून्य
आर श्रीराम	अध्यक्ष एवं प्रबंधक ट्रस्टी	4	शून्य

न्यासीगण (ट्रस्टी) औपचारिक बोर्ड बैठकों से परे अपनी भागीदारी का विस्तार करते हुए, वर्ष भर संगठन के विभिन्न पहलुओं के साथ सक्रिय रूप से जुड़ते हैं और उनका समर्थन भी करते हैं।

अशोक कामत प्रारंभ से ही सह-संस्थापक ट्रस्टी के रूप में प्रथम बुक्स का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। वह अक्षरा फाउंडेशन का नेतृत्व करते हैं और भारत में शिक्षा संबंधी असमानताओं को दूर करने के प्रति गहरी प्रतिबद्धता रखते हैं। वे सरकार के सभी स्तरों अर्थात् राज्य स्तर से लेकर ज़मीनी स्तर तक की समझ एवं जुड़ाव की नेतृत्व क्षमता रखते हैं एवं विकासात्मक परिवर्तन के लिए टिकाऊ मॉडल विकसित करने और विस्तार देने में सक्षम हैं।

हरित नागपाल मुख्यधारा के व्यावसायिक दृष्टिकोण, उपभोक्ता अंतर्दृष्टि, भारतव्यापी संचालन के अपने अनुभव और जमीनी हकीकत की समझ को अपने व्यक्तित्व के माध्यम से रेखांकित करते हैं जिससे हमारी पहुँच को समायोजित करने और हमारे मिशन के विस्तार में अतुलनीय सहायता मिलती है।

परवीन वर्मा पूर्व में सीआरवाई की प्रमुख रही हैं। उन्होंने अपना पूरा करियर बच्चों से जुड़े मुद्दों को समर्पित किया है। वह न केवल बच्चों की आवश्यकताओं के प्रति गहरी संवेदनशील है बल्कि बेहतर विचार से भी परिपूर्ण है। अपने उत्कृष्ट विचार से वे नेतृत्व विकास और संस्थान निर्माण में अपनी विशेषज्ञता और अंतर्दृष्टि भी प्रदान करती हैं।

रेखा मेनन संस्थापक ट्रस्टियों में से एक रही हैं और उन्होंने संगठित कॉर्पोरेट दृष्टिकोण और उद्देश्यपूर्ण कार्य करने के संतुलन को बनाए रखा है। वह हमेशा अपने व्यापक दृष्टिकोण और बड़े पैमाने पर प्रभाव के प्रति चिंतित रही हैं।

मीनाक्षी रमेश यूनाइटेड वे चेन्नई की सीईओ और सिटिजन मैटर्स की सह-संस्थापक हैं। इन्होंने 2001 में प्रथम के साथ अपने सामाजिक क्षेत्रों में कार्य की शुरूआत की थी। वे एमएस यूनिवर्सिटी बड़ौदा और आईआईएम अहमदाबाद की पूर्व छात्रा भी हैं तथा चार गैर-सरकारी संगठनों के बोर्ड में कार्यरत भी हैं।

एम. एस. श्रीराम एक शिक्षाविद् और लेखक हैं। वे ट्रस्ट के प्रबंधन के व्यावहारिक पहलुओं को व्यापक डिजाइन और वैचारिक रूपरेखाओं के साथ जोड़ते हैं।

श्रीकांत नादमुनी तकनीक की गहरी समझ रखते हैं और बच्चों के संदर्भ में इसे सुरक्षित रूप से अपनाने के तरीके भी जानते हैं। उन्होंने उन्नत क्षेत्रों में काम किया है और तकनीक व नवाचारपूर्ण अनुप्रयोगों से जुड़े सभी पहलुओं पर भरोसेमंद ट्रस्टी हैं।

सुज़ैन सिंह ने कई वर्षों तक अध्यक्ष और प्रबंध ट्रस्टी के रूप में संगठन का नेतृत्व किया, जहाँ उन्होंने स्टोरीवीवर सहित कई अन्य नवाचारों की शुरुआत और विस्तार किया हैं। वह लक्ष्य केंद्रित कार्य करती हैं तथा विवरण और सौंदर्यशास्त्र पर गहरी नजर रखती हैं। इसके साथ ही वह हर बच्चे तक आनंददायक पुस्तकें पहुँचाने के प्रति गहरी जुनून रखती हैं।

आर. श्रीराम, पुस्तकों के जादू एवं आनंदायक पठन तक सभी की पहुँच हो; इस उद्देश्य को लोकतांत्रिक ढंग से लागू करने के लिए बहुत हद तक जुनूनी बने हुए हैं। एक उद्यमी के रूप में, उनके पास गहरी अंतर्दृष्टि एवं विविध व्यवसायों व साहसिक लक्ष्यों वाले गैर-लाभकारी संगठनों के साथ काम करने का व्यापक अनुभव है। वर्तमान समय में श्रीराम अध्यक्ष और प्रबंधन के ट्रस्टी हैं तथा नेतृत्व टीम का मार्गदर्शन करने में सक्रिय भूमिका निभाते हैं।

चित्रांकन श्रेय

शीर्षक	चित्रांकन	लेखक
बरसा बादल	तसनीम अमिरुद्दीन	संजीव जयसवाल ‘संजय’
मेरे जिगरी दोस्त	ऋषभ बंशकर	रमा हर्डिकर-सखदेव
क्या देखती है अनु?	लावण्या कार्तिक	लावण्या कार्तिक
एक किताब पुचकू के लिए	राजीव आइप	दीपांजना पाल
नाणम्माल और कमलाताल की समुद्रयात्रा	सुशांत अहीर	मेनका रमण
बारिश में क्या गाएँ	राजीव आइप	माला कुमार एवं मनीषा चौधरी
अच्चाची का रंगीन छाता	अथिया अशोक कुमार	अथिया अशोक कुमार
मेरी पीली छतरी	पूजना प्रसन्ना	पूजना प्रसन्ना
मीरा और अमीरा	लावण्या नायडू	निम्मी चाको
गरमागरम चाय चाहिये!	प्रिया कुरियन	माला कुमार एवं मनीषा चौधरी
टीने और दूर बसे पर्वत	ओगिन नयम	शीखा त्रिपाठी
मुफ़्त की कुल्फ़ी	अलंकृता अमाया	अलंकृता अमाया
अंतरिक्ष के नियम	कानातो जिमो	अपर्णा कपूर एवं बीजल वच्छरजानी
आज, मैं हूँ...	संध्या प्रभात	वर्षा सेशन
मिंग मिंग का अनोखा बाल	विष्णु एम नायर	जेरी पिंटो
घूम-घूम घड़ियाल का अनोखा सफर	रोश	अपर्णा कपूर
कीट वैज्ञानिक: राजमोहना केलोथ	जोअन्ना दवाला	श्वेता गणेश कुमार
अदरक की बर्फी	सिद्धि वर्तक	वसीमबारी मनेर

प्रथम बुक्स कई भाषाओं में पुस्तकें तैयार कर रहा है ताकि बच्चे पठन-पाठन का भरपूर आनंद ले सकें। हर बार जब बच्चे अपनी मातृभाषा में लिखी गई किताबों को हाथ में लेते हैं, तब कमरे में उत्साहपूर्ण माहौल को स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है। इन सभी अनुभवों से प्रेरित होकर, भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए इस वर्ष के वार्षिक रिपोर्ट को विशेष रूप से किया गया है। जिसमें उन भाषाओं के अक्षरों से बने डिज़ाइन का प्रयोग किया गया है जिनमें हमने अपनी पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

Pratham Books

#621, 2nd floor, 5th Main, OMBR Layout,
Banaswadi, Bengaluru 560043
T: +91 80 42052574 / 41159009
New Delhi | T: +91 11 41042483

www.prathambooks.org
www.storyweaver.org.in
www.donateabook.org.in